NH Notes – 11

An open letter to honorable C.M. of Haryana!

आदरणीय माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार श्री मनोहर लाल खट्टर जी,

ईमानदारी से सीधी और दिल की बात आपको कहने को मुखातिब हो रहा हूँ| कल के हिंदी से ले अंग्रेजी अखबारों तक में आपके द्वारा खापों *(जिनको की जाटों की परछाई समझा जाता है तो एक हिसाब से "जाटों" की भी कहना गलत नहीं होगा)* की भूरी-भूरी परन्तु सच्ची प्रसंशा बारे पढ़ा| जिसके लिए पहली नैतिकता के चलते आपका तहे दिल से शुक्र-गुजार भी हूँ, परन्तु इसको पढ़ कर ख़ुशी के साथ संशय जैसी भावना भी साथ-साथ आती रही, जिसको कि आपके समक्ष रखना चाहूंगा|

बड़ी ही आत्मीयता से आपको एक ऐतिहासिक वाकया याद दिलाना चाहूंगा| बात उन दिनों की है जब श्री जवाहरलाल नेहरू देश के प्रधानमंत्री हुआ करते थे| उनको उनके सलाहकारों में से किसी ने कहा कि अगर आपको दिल्ली पर लम्बे समय तक और निर्विवाद राज करना है तो इसके इर्दगिर्द बसी हुई समर्थ-साधन सम्पन व् मेहनतकश जाट कौम को सराहना होगा| और नेहरू जी ने ऐसा ही किया और वही कहा जिसको कि कई जाट बड़े गर्व से "जाटों के बारे किसने क्या कहा" के स्टेटस-बोर्डों वगैरह पर बड़ी शान से लिखते हैं कि "दिल्ली के चारों ओर एक ऐसी झुझारू व् बहादुर जाट कौम बसती है जो जब चाहे दिल्ली का राज हथिया ले|" बस उन्होंने यह पंक्ति कही और भावुकीय स्तर से जाट खुश, और नेहरू जी का राज निष्कंटक|

लेकिन इन्हीं नेहरू जी के पास उस वक्त के भारतीय राष्ट्रीय सर्वजातीय सर्वखाप के महामंत्री व् सर्वखाप इतिहास के संरक्षक स्वर्गीय दादा चौधरी कबूल सिंह बालियान जी एक मुलाकात में उनसे एक अनुरोध लेकर जाते हैं कि **सिनेमा व् मीडिया के नकारात्मक रूप को रोकने हेतु कानून बनाएं, क्योंकि इससे समाज दिशाविहीन होता है| दादा जी ने उनको कहा कि सिनेमा व् मीडिया का सकारात्मक रूप समाज के लिए जितना लाभप्रद हो सकता है, नकारात्मक उतना ही हानिकारक व् घातक; इसलिए इसकी नकारात्मकता जैसे कि नग्नता, फूहड़ता, खबरों की असत्यता-भ्रामकता को नकेल में रखने हेतु संसद में एक कानून पारित करवाएं|** जिस पर नेहरू जी ने उनको इस पर कानून बनाने जैसा कोई आश्वासन तक भी देने की बजाय यही कहा कहा कि समाज के लिए इतनी सच्ची सचेतता रखते हैं, जरूर आप जाट चौधरी होंगे| और ऐसे वह कानून कभी भी अस्तित्व में नहीं आया|

और मीडिया की भ्रमात्मकता कितनी घातक हो सकती है यह आप अभी-अभी रोहतक बस छेड़छाड़ वाले मामले में देख भी चुके हो; जिसका अंत निर्णय यह हुआ कि आपको इस घटना के एक पक्ष पर घोषित पारितोषिक रोकना पड़ा|

खैर, नेहरू जी के इस उदाहरण को रखने का सीधा-सीधा मकसद यही है कि मैं इस असमंझस में हूँ कि एक तरफ तो आपकी सरकारें लॉ कमीशन द्वारा "सगोत्र विवाह" वैध करने हेतु उनकी प्रस्तावना पर दस्तखत

कर देती हैं और दूसरी तरफ उन्हीं खापों को जो कि सगोत्र विवाह नहीं मानती, उनकी इतनी भूरी-भूरी प्रशंसा करती है, जैसे कि आपने कल की|

अब आगे दो बातें हैं, या तो आप ऐसे वक्तव्यों से जाट और खाप समाज किसी उहापोह की परिस्थिति में रखना चाहते हैं, इसलिए इनके लिए नेहरू जी वाला फार्मूला अपना के इनकी प्रशंसा मात्र कर गए, अन्यथा अगर आप वाकई में खापों से इतने प्रभावित हैं तो आपको खापों की लंबित मांगो जैसे कि

1) इनको लोक-अदालतों का दर्जा
2) हिन्दू विवाह अधिनियम में तर्कसंगत बदलाव
3) सगोत्र-विवाह वैधता कानून (अपवाद के लिए इस कानून में जगह रखते हुए)
4) आये दिन मीडिया द्वारा इन पर लगाए जाने वाले व्यर्थ लांछन
5) मीडिया द्वारा हर ऐरी-गैरी पंचायत को इनके मठ्ठे मढ़ देना
6) झारखण्ड-बंगाल-बिहार तक में भी खाप पंचायतें बता देना

आदि-आदि पर कानूनी रूप से कुछ करवाएं|

ईमेल का संदर्भ: http://ibnlive.in.com/news/haryana-cm-khattar-defends-khap-panchayats-calls-its-decisions-sensible/516832-37-64.html

आपका भवदीय,

Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Date: 07/12/2014